OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 8

कथा सरिता

जो चाहोगे, वह पाओगे

एक साधु था, वह रोज़ घाट के किनारे बैठ कर चिल्लाया करता था, ''जो चाहोगे सो पाओगे।'' बहुत से लोग वहाँ से गुज़रते थे पर कोई भी उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था और सब उसे एक पागल आदमी समझते थे। एक दिन एक युवक वहाँ से गुज़रा और उसने उस साधु की आवाज़ सुनी, ''जो चाहोगे, सो पाओगे।'' आवाज सुनकर वह साधु के पास गया। उसने साधु से पूछा -''महाराज, आप झूठ बोल रहे हैं, क्या आप मुझे वो दे सकते हैं जो मैं चाहता हूँ?''साधु उसकी बात को सुनकर बोला -''हाँ बेटा तुम जो कुछ भी चाहते हो, मैं उसे ज़रूर दूंगा, बस तुम्हें मेरी बात माननी होगी। लेकिन पहले ये तो बताओ तुम्हें आखिर चाहिए क्या?'' युवक बोला, ''मेरी एक इच्छा है कि मैं हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनूं।'' साधु बोला, ''कोई बात नहीं, मैं तुम्हें एक हीरा और एक मोती देता हूँ, उससे तुम जितने भी हीरे-मोती बनाना चाहोगे बना पाओगे।'' और ऐसा कहते हुए साधु ने अपना हाथ आदमी की हथेली पर रखते हुए कहा, ''पुत्र, मैं तुम्हें दुनिया का सबसे अनमोल हीरा दे रहा हूँ, लोग उसे 'समय' कहते हैं, इसे तेज़ी से अपनी मुट्ठी में पकड़ लो और इसे कभी मत गंवाना। तुम इससे जितने चाहो उतने हीरे बना सकते हो।'' युवक अभी कुछ सोच ही रहा था कि साधु उसकी दूसरी हथेली पकड़ते हुए बोला, ''पुत्र इसे पकड़ो, यह दुनिया का सबसे कीमती मोती है, लोग इसे 'धैर्य' कहते हैं। जब कभी समय देने के बावजूद परिणाम ना मिले तो इस कीमती मोती को धारण कर लेना। याद रखना, जिसके पास यह मोती है, वह दुनिया में कुछ भी प्राप्त कर सकता है।'' युवक गम्भीरता से साधु की बातों पर विचार करता है और निश्चय करता है कि आज से वह कभी अपना समय बर्बाद नहीं करेगा और हमेशा धैर्य से काम लेगा। और ऐसा सोचकर वह हीरों के एक बहुत बड़े व्यापारी के यहाँ काम शुरू करता है और अपनी मेहनत और ईमानदारी के बल पर एक दिन खुद भी हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी बनता है। '' 'समय और धैर्य' वह दो हीरे-मोती हैं, जिनके बल पर हम बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अत: ज़रूरी है कि हम अपने कीमती समय को बर्बाद ना करें और अपनी मंज़िल तक पहुंचने के लिए धैर्य से काम लें।

ईमानदारी

एक बहुत बड़ी कम्पनी के सी.ई.ओ. जल्द ही रिटायर होने वाले थे। उन्होंने कम्पनी को बहुत ही मेहनत से इस मुकाम पर लाया था, इसलिए वे चाहते थे कि किसी काबिल व्यक्ति को ही अपना उत्तराधिकारी बनाएं। इसके लिए उन्होंने कम्पनी में कार्य करने वाले सभी होनहार युवाओं की एक मीटिंग बुलाई। उन्होंने सभी को एक-एक पौधे का बीज देकर कहा कि -''इस बीज को आप लोग घर ले जाकर एक गमले में रोपें। इसकी देखभाल करें, इसे पानी दें, नियमित धूप दें और एक साल बाद जिसका भी पौधा अच्छा होगा उसे कम्पनी का भावी सी.ई.ओ. नियुक्त किया जायेगा।

सभी कार्यकर्ता इस बात से बहुत खुश हुए। सभी को यकीन था कि वो ही इस प्रतियोगिता में विजयी होंगे। इन्हीं में से एक काबिल युवा लड़की थी भावना। उसने भी बड़ी रुचि से इस प्रतियोगिता में भाग लिया। आफिस से वापिस जाते हुए उसने एक प्यारा सा गमला खरीदा और घर में जाकर उस बीज को उस गमले में रोप दिया। उसने अपने पापा को भी सारी बात बताई। पर उन्होंने भावना को सलाह दी कि इस बीज की देखरेख करते हुए अपने ऑफिस के कार्य में भी मन लगाकर ध्यान दे। अपने ऑफिस के कार्य को भी लगन से करे। कुछ दिन बीत गये। भावना रोज़ गमले में पानी देती, उसका पूरा ध्यान रखती पर उसमें से कुछ भी निकलता ही नहीं था। धीरे-धीरे एक महीना बीत गया। पर वो बीज अंकुरित नहीं हुआ। भावना बहुत उदास हो गई, पर वह अपने ऑफिस के कार्य में मन लगाये हुए थी। छ: महीने बाद भावना की शादी हुई तो वह अपने नये घर में गमला भी लेकर गई। समय बीतता गया पर गमले में कुछ भी नहीं उगा। भावना को रोज़ गमले में पानी देता देख उसके पति ने भी सवाल किया आखिर ये क्या है? तब भावना ने उन्हें सब कुछ बताया तो उसके पति ने भी उन्हें परेशान न होने की सलाह दी।

आखिर वह दिन भी आ गया जब सभी को कम्पनी में अपना-अपना पौधा लेकर जाना था। भावना परेशान होकर अपने पति से कहने लगी कि वो इस खाली गमले के साथ कम्पनी नहीं जा सकती, ऐसे तो सबके आगे बहुत बेइज्जती होगी। लेकिन उसके पति ने समझाया कि उसे ईमानदारी से अपना खाली गमला लेकर जाना चाहिए और सच्चाई का सामना करना चाहिए। भावना अपना खाली गमला लेकर कम्पनी गई। सभी उसके गमले को देखकर मज़ाक उड़ाने लगे क्योंकि बाकी सभी के गमले सुंदर-सुंदर पौधों से भरे हुए थे। सी.ई.ओ. आए तो उन्होंने सभी के हरे-भरे सुंदर पौधों से युक्त गमले देखे और कहा कि मुझे गर्व है कि आप सभी ने बीज की पालना कर एक साल में बहुत सुंदर पौधे तैयार कर लिए। पर जैसे ही उनकी नज़र भावना के गमले पर पड़ी तो उन्होंने पूछा कि आखिर आपका गमला खाली क्यों है? भावना ने उन्हें सब सच-सच बताया कि उन्होंने बीज की बहुत संभाल की लेकिन वह अंकुरित ही नहीं हुआ। सी.ई.ओ. ने भावना को छोड़कर सभी को बैठने को कहा। और एनाउंस किया कि ''आज से आप सभी की नई सी.ई.ओ. भावना है।'' सभी हैरान हो गये। ''आखिर ये सी.ई.ओ. कैसे बन सकती हैं? इनका तो पौधा उगा ही नहीं,''- सभी ने एक स्वर में सवाल उठाये।

तब सी.ई.ओ. ने कहा कि ''दरअसल, एक साल पहले मैंने आप सभी को जो बीज दिए थे वे उबले हुए थे, उनमें जान ही नहीं थी। उनमें से पौधा उगाया ही नहीं जा सकता था। केवल भावना ने ही सच्चाई से जो स्थिति थी उसे हम सभी के सामने रखा लेकिन आप सभी ने बीज ना अंकुरित होने पर धोखे से अच्छे-अच्छे पौधे वाले गमले लेकर मुझे दिखाने आ गये। भावना ने ईमानदारी व सच्चाई से कार्य किया इसलिए यही सी.ई.ओ. पद की असली हकदार है।

निंदा करने की प्रवृत्ति

एक बार किसी विदेशी नागरिक को अपराधी समझकर राजा ने फांसी की सज़ा का हुक्म सुनाया। यह सुनकर उस विदेशी व्यक्ति ने राजा को अपशब्द कहते हुए उसके विनाश कि कामना की। राजा ने अपने मंत्री से, जो कई भाषाओं का जानकार था, पूछा- यह क्या कह रहा है? मंत्री ने विदेशी के अपशब्द सुन लिये थे, किंतु उसने कहा- महाराज! यह आपको दुआयें देते हुए कह रहा है- आप हज़ार साल तक जियें। राजा यह सुनकर बहुत खुश हुआ। तभी उस मंत्री से ईर्ष्या रखने वाले एक अन्य मंत्री ने आपत्ति उठाई और बोला- महाराज! यह आपको दुआ नहीं, बल्कि आपके विनाश की कामना कर रहा है। उसने पहले मंत्री की निंदा करते हुए कहा-ये मंत्री जिन्हें आप अपना विश्वासपात्र समझते हैं, असत्य बोल रहे हैं। राजा ने पहले मंत्री से बात कर सत्यता जाननी चाही, तो वह बोला-हाँ महाराज! यह सत्य है कि इस अपराधी ने आपको गालियां दी और मैंने आपसे असत्य कहा। पहले मंत्री की बात सुनकर राजा ने कहा-तुमने इसे बचाने की भावना से अपने राजा से झूठ बोला। मानव धर्म को सर्वोपरि मानकर तुमने राजधर्म को पीछे रखा। मैं तुमसे बेहद खुश हुआ। फिर राजा ने विदेशी की ओर देखकर कहा-मैं तुम्हें मुक्त करता हूं। निर्दोष होने के कारण ही तुम्हें इतना क्रोध आया कि तुमने राजा को अपशब्द कहे और मंत्री महोदय तुमने सच इसलिए कहा क्योंकि तुम पहले मंत्री से ईर्ष्या रखते हो। ऐसे लोग मेरे राज्य में रहने योग्य नहीं। तुम इस राज्य से चले जाओ।

शिक्षा- दूसरों की निंदा करने की प्रवृत्ति से अन्य की हानि होने के साथ-साथ स्वयं को भी नुकसान ही होता है।

नागपुर-महा.। समर कैम्प में आये बच्चों को संबोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पारानी।

कायमगंज-उ.प्र.। पत्रकार गोष्ठी करने के पश्चात् समूह चित्र में दैनिक जागरण के महेश वर्मा, राष्ट्रीय सहारा के सतीश गुप्ता, आज न्यूज़ पेपर के प्रदीप गुप्ता, अमर उजाला के मधु अरोड़ा, स्वतन्त्र भारत नव टाइम्स, डेज़ी न्यूज़, हिन्दुस्तान, शिव सन्देश आदि पेपर के पत्रकार भाई तथा ब्र.कु. मिथलेश।

लाडवा-हरियाणा। 'अलविदा तनाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए प्रदीप गर्ग, एन.के. गुप्ता, सरदार जगमीत सिंह, ब्र.कु. राधा,मुम्बई, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. राधा,कुरुक्षेत्र।

मण्डी-गोविंद गढ़। महिला सम्मान यात्रा का शिव ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए सुखविन्द्र बहन,एम.सी. तथा ब्र.कु. सरस्वती।

मण्डी-हि.प्र.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में जेल अधीक्षक एन.आर. भारद्वाज, ब्र.कु. भगवान,माउण्ट आबू, ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. दक्षा, ब्र.कु. जमुना तथा ब्र.कु. नीतू।

नाभा-पंजाब। डी.डी.पी.ओ. विनोद कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ब्रिज तथा ब्र.कु. गुलशन। साथ हैं ब्र.कु. बीना, जीवन शाही भाई, डॉ. सुनीता तथा अन्य।